तब इतहीं जो वतन पिउ पार, सखी भाव भजिए भरतार।
आतम महामत है सूरधीर, प्रेमें देखाए जुदे खीर नीर।। ३० ।।

तब पार के पार विराजमान धनी, जो यहां हैं, उन्हें अंगना भाव से भजकर (सेवा कर) प्राप्त करे। श्री महामति की आत्मा बड़ी बलशाली है, जिसने जीव और मन को अलग-अलग कर दिया।

।। प्रकरण ।। ३२ ।। चौपाई ।। ९८४ ।।

श्री भागवत को सार

सुनियो साथ कहूं विचार, फल वस्त जो अपनों सार।
सो ए देख के आओ वतन, माया अमल से राखो जतन।। १ ।।

हे मेरे सुन्दरसाथजी! मैं अपने और ज्ञान के प्रति विचार कहती हूं। इन वचनों को देखकर घर और माया के अमल (प्रभाव) से दूर रहो और अपने घर परमधाम आओ।

इन अमल को बड़ो विस्तार, सो ए देखना नहीं निरधार।
पेहेले आपन को बरजे सही, श्री मुख वानी धनिऐं कही।। २ ।।

इस माया के अमल (प्रभाव) का बड़ा विस्तार है। निश्चय करके इसे देखना नहीं। पहले ही धाम धनी ने हमको रोका था।

तिन कारन तुमें देखाऊं सार, मूल वतन के सब प्रकार।
धनी अपनों धनी को विलास, जिनथें उपज अखंड हुओ रास।। ३ ।।

इसलिए तुम्हें सार वस्तु दिखाती हूं और घर की हकीकत बताती हूं। अपने धनी और धनी के आनन्द से ही रास अखण्ड हुआ।

ए सुनियो आतम के श्रवन, सो नाहीं जो सुनिए ऊपर के मन।
वेद को सार कह्यो भागवत, ए फल उपज्यो सास्त्रों के अंत।। ४ ।।

इसको ध्यान से सुनना। यह ऐसी बाणी नहीं है कि साधारण रूप से सुन ली जाए। वेदों का सार भागवत कहा गया है, जो सब शास्त्रों के बाद में आई है।

सो फल सार सुकजीऐं लियो, सींच के अमृत पकव कियो।
ए फल सार जो भागवत भयो, ताको सार दसम स्कंध कह्यो।। ५ ।।

वेदों का सार शुकदेवजी ने ग्रहण किया तथा अपनी अमृतवाणी को सींचकर पक्का किया। इस प्रकार से यह भागवत सार-ग्रन्थ बना और इस पूरे ग्रन्थ का सार दसवां स्कंध है।

दसम के नब्बे अध्या, तिनका सार भी जुदा कह्या।
ताको सार अध्याय पैंतीस, जो बृजलीला करी जगदीस।। ६ ।।

दसवें स्कंध में नब्बे अध्याय हैं। उनका सार भी अलग से कहा है। इस सार में पैंतीस अध्याय हैं। जिसमें श्री कृष्ण की ब्रज की लीला का वर्णन है।

जगदीस नाम विष्णु को होए, यों न कहूं तो समझे क्यों कोए।
ए जो प्रेम लीला श्री कृष्णजीऐं करी, सो गोपन में गोपियों चितधरी।। ७ ।।

संसार के लोग जगदीश नाम से विष्णु भगवान को समझते हैं, इसलिए जगदीश शब्द का प्रयोग किया है। ऐसा न कहूं तो लोग समझेंगे कि श्री कृष्णजी ने जो प्रेम की लीला की है, उसे ग्वालों और गोपियों में केवल गोपियों ने चित्त में धारण किया है।

ए ब्रह्म लीला भई जो दोए, बृज लीला रास लीला सोए।
तामे तीस अध्याय जो बाल चरित्र, ए ब्रह्म लीला उत्तम पवित्र।। ८ ।।

यह जो ब्रह्म की लीला हुई है, एक ब्रज की और दूसरी रास की लीला है। इसमें तीस अध्याय में बाल लीला का वर्णन है। यह ब्रह्मलीला बड़ी उत्तम और पवित्र है।

पंच अध्यायी ताको जो सार, किसोर लीला जोगमाया विस्तार।
बृज लीला को जो ब्रह्मांड, रात दिन जित होत अखंड।। ९ ।।

इस लीला का सार पंचाध्यायी रास है, जिसमें योगमाया में किशोर लीला का वर्णन है। बृज की लीला का जो ब्रह्माण्ड है, वहां की रात और दिन की लीला अखण्ड होकर हो रही है।

जोग माया जो लीला रास, रात अखंड सब चेतन विलास।
ए लीला सुकें आवेसमें कही, राजा परीछितें सही न गई।। १० ।।

योगमाया के ब्रह्माण्ड में जो रास की लीला है, वह चेतन अवस्था में आनन्द करते हुए रात की अखण्ड लीला है। उस लीला का वर्णन शुकदेवजी ने आवेश में कहा है, जिसे राजा परीक्षित सहन नहीं कर सका।

ए लीला क्यों सही जाए, बैकुंठ को अधिकारी राए।
सुक के अंग हुओ उलास, जानूं बरनन करूंगो रास।। ११ ।।

राजा परीक्षित बैकुण्ठ का अधिकारी था। इस लीला को कैसे सहन करता? शुकदेवजी के तन में बड़ी चाहना थी कि मैं रास का वर्णन करूं।

या समें प्रश्न कियो राजान, सुक को जोस दियो तिन भान।
प्रश्न चूक्यो भयो अजान, रास लीला ना बरनवी प्रवान।। १२ ।।

इस समय राजा ने प्रश्न कर दिया और शुकदेवजी के जोश को भंग कर दिया। प्रश्न करके राजा ने बड़ी भूल की। फिर रास लीला का वर्णन नहीं हो सका।

तब हाथ निलाटें दियो सही, सुकें दुख पाए के कही।
मैं जोगी तें राजा भयो, रास को सुख न जाए कह्यो।। १३ ।।

तब शुकदेवजी ने दु:खी होकर माथे पर हाथ मारकर कहा, मैं योगी और तू राजा रह गया। अब रास के सुख का वर्णन नहीं हो सकता।

ए वानी मेरे मुख थें ना परे, ना तेरे श्रवना संचरे।
ए जोग आपन नाहीं दोए, तो इन लीला को सुख क्यों होए।। १४ ।।

यह वाणी अब मेरे मुख से नहीं निकल सकती, न तेरे कान सुन सकते हैं। हम दोनों ही इसके पात्र नहीं हैं, तो इस लीला का सुख कैसे मिले?

याके पात्र होसी इन जोग, या लीला को सो लेसी भोग।
केसरी दूध ना रहे रज मात्र, उत्तम कनक बिना जो पात्र।। १५ ।।

जो इस लीला के पात्र होंगे वही इसका आनन्द ले सकेंगे। सिंहनी (शेरनी) का दूध सोने के बर्तन के बिना नहीं टिकता।

एह वचन सुनके राए, पड्यो भोम खाए मुरछाए।
कंपमान होए कलकल्या, रोवे बोहोत अंतस्करन गल्या।। १६ ।।

ऐसे वचन सुनकर राजा मूर्छित होकर भूमि पर गिर पड़ा और बिलख-बिलखकर कांपते हुए रोने लगा। उसके अन्त:करण में (दिल में) बहुत ही दु:ख हुआ।

तलफ तलफ दुख पावे मन, अंग मांहें लागी अगिन।
तब सुकजिऐं दिलासा दिया, आंसूं पोंछ के बैठा किया।। १७ ।।

वह तड़प-तड़पकर मन में दुःखी होने लगा और उसे ऐसा लगा जैसे उसके तन में आग लग गई हो। तब शुकदेवजी ने उसे दिलासा दी और आंसू पोंछकर बिठाया।

सुनहो राजा द्रढ़ कर मन, अंतरगत केहेता वचन।
सो केहेने वाला उठके गया, मैं अकेला बैठा रह्या।। १८ ।।

शुकदेवजी बोले, हे राजा! एकचित्त होकर सुनो। मेरे अन्दर से कहने वाली शक्ति उठकर चली गई है और अब मैं अकेला बैठा हूं।

अब राजा पूछत मोहे कहा, तुझ सरीखा मैं हो रह्या।
तब परीछित चरन पकड़ के कहे, स्वामी ए दाझ जिन अंगमें रहे।। १९ ।।

हे राजा! अब मेरे से क्या पूछते हो? मैं भी अब तेरे समान ही हूं। तब राजा परीक्षित ने शुकदेवजी के चरण पकड लिए और बोले, हे स्वामी! इस भूल की आग मुझसे सहन नहीं हो रही है।

मुनीजी मैं बोहोत दुख पाऊं, एह दाझ जिन लिए जाऊं।
तब भागे जोस कही पंच अध्याई, रास बरनन ना हुआ तिन तांई।। २० ।।

राजा परीक्षित कहता है, हे मुनिजी! मैं बहुत दुःखी हो रहा हूं। कुछ ऐसा करो जिससे मैं इस भूल की ज्वाला से बच सकूं। तब जोश (शक्ति) जाने के बाद शुकदेवजी ने पांच अध्याय वर्णन किए। अखण्ड रास का वर्णन फिर भी नहीं हुआ।

नातो पंच अध्यायी क्यों कहे सुक मुन, रासलीला अखंड बरनन।
ए लीला क्यों अध बीच रहे, एकादस द्वादस स्कंध कहे।। २१ ।।

नहीं तो शुकदेवजी की वाणी से अखण्ड रास का वर्णन पांच अध्यायों में कैसे समाप्त हो जाता? यह लीला बीच में कैसे छूट जाती? फिर ग्यारहवें और बारहवें स्कन्ध का वर्णन किया।

ए रास लीला को छोड़ के सुख, आधा लुगा न निकसे मुख।
पर ए केहेवाए धनी के जोस, सो उतर गया वचन के रोस।। २२ ।।

इस रास लीला के सुख इतने बेशुमार हैं कि इसे छोड़कर आधा अक्षर भी दूसरा वर्णन नहीं होता, परन्तु इस लीला का वर्णन धनी के जोश से हो रहा था। वह राजा के प्रश्न करने से चला गया।

क्या करे अधबीच में लिया, अखंड सुख पूरा केहेने ना दिया।
दोष नहीं राजा को इत, ब्रह्मसृष्टी बिना न पोहोंचे तित।। २३ ।।

क्या करे, बीच में ही प्रश्न कर दिया और अखण्ड सुख का वर्णन करने नहीं दिया। यहां राजा का कोई दोष नहीं है। यह सुख ब्रह्मसृष्टि के बिना कोई पा नहीं सकता।

जाको जाना बैकुंठ बास, सो क्यों सहे अखण्ड प्रकास।
तो पार दरवाजे मूंदे रहे, हद के संगिए खोलने ना दिए।। २४ ।।

जिसका ठिकाना (स्थान) बैकुण्ठ हो, वह अखण्ड के ज्ञान को सहन कैसे करेगा? इसलिए बेहद के दरवाजे बन्द ही रह गए और हद के संगी राजा परीक्षित ने खोलने नहीं दिए।

अब सुकजीकी केती कहूं बान, सार काढ़ने ग्रह्यो पुरान।
सबको सार कह्यो ए जो रास, एजो इंद्रावती मुख हुओ प्रकास।। २५ ।।

अब शुकदेवजी की वाणी का कितना वर्णन करूं? यह मैंने उसका सार ग्रहण करने के लिए किया है। पूरी भागवत का सार रास है जो श्री इन्द्रावतीजी के मुख से प्रकट हुआ।

अब कहूं इन रासको सार, जो तारतम वचन है निरधार।
तारतम सार जागनी विचार, सबको अर्थ करसी निरवार।। २६ ।।

अब इस रास के सार को कहती हूं, जो तारतम वाणी से स्पष्ट हुआ। तारतम का सार जागनी है। यह सब ग्रन्थों के अर्थ का निर्णय करेगा।

निराकार के पार के पार, तारतम को जागनी भयो सार।
अछर पार घर अछरातीत, धाम के यामें सब चरित्र।। २७ ।।

निराकार क्षर के पार बेहद, बेहद के पार अक्षर तथा अक्षर के पार अक्षरातीत घर। तारतम वाणी के ज्ञान से इस घर की सब लीला का जाहिर होना ही जागनी का सार है।

इत ब्रह्म लीला को बड़ो विस्तार, या मुखथें कहा कहूं प्रकार।
ए तारतम को बड़ो उजास, धनी आएके कियो प्रकास।। २८ ।।

उस अक्षरातीत धाम में ब्रह्म लीला का बहुत बड़ा विस्तार है। इसे मुख से कैसे कहूं? धनी ने स्वयं आकर तारतम वाणी के उजाले से इसे जाहिर किया है।

संसे काहूं ना रेहेवे कोए, ए उजाला त्रैलोकी में होए।
प्रगट भई परआतमा, सो सबको साख देवे आतमा।। २९ ।।

इस तारतम वाणी से किसी प्रकार का संशय नहीं रह जाएगा और उसका प्रकाश चौदह लोकों के ब्रह्माण्ड में फैलेगा। हमारी परात्म जो धाम धनी के चरणों में बैठी हैं, उनकी जानकारी मिली और इसकी गवाही सब सुन्दरसाथ की आत्माएं देंगी।

उड़्यो अंधेर काढ़्यो विकार, निरमल सब होसी संसार।
ए प्रकास ले धनी आए इत, साथ लीजो तुम मांहें चित।। ३० ।।

इस तारतम वाणी से अज्ञान का अन्धकार उड़ जाएगा और सारा संसार निर्मल होगा। धनी तारतम ज्ञान को लेकर आए हैं, जिसे हे सुन्दरसाथजी! अपने चित्त में धारण करना।

इन घर बुलावे ए धनी, ब्रह्मसृष्ट जो है अपनी।
खेल किया सो तुम कारन, ए विचार देखो प्रकास वचन।। ३१ ।।

धनी अपनी ब्रह्मसृष्टियों को घर (परमधाम) में बुला रहे हैं। यह खेल भी तुम्हारे वास्ते ही किया है। इसका विचार प्रकाश वाणी में देखो।

देख्यो खेल मिल्यो सब साथ, जागनी रास बड़ो विलास।
खेलते हंसते चले वतन, धनी साथ सब होए प्रसंन।। ३२ ।।

खेल देखकर सब सुन्दरसाथ मिला। जागनी रास का बड़ा आनन्द लेकर धनी और सब सुन्दरसाथ हंसते खेलते घर चलेंगे।

इतहीं बैठे जागे घर धाम, पूरन मनोरथ हुए सब काम।
उड़्यो अग्यान सबों खुली नजर, उठ बैठे सब घर के घर।। ३३ ।।

मूल मिलावे में बैठे ही अपने घर में जाग गए। सबके मनकी इच्छा पूरी हो गई। अज्ञानता उड़ गई और नजर खुल गई। सब अपने घर में उठ बैठे।

हांसी न रहे पकरी, धनीऐं जो साथ पर करी।
हंसते ताली देकर उठे, धनी महामत साथ एकठे।। ३४ ।।

श्री राजजी महाराज ने जो सुन्दरसाथ पर हंसी की है, परमधाम में उठने के बाद काबू से बाहर होगी। सभी सुन्दरसाथ और महामति अपने पिया के साथ ताली बजाकर एक साथ उठेंगे।

।। प्रकरण ।। ३३ ।। चौपाई ।। १०१८ ।।

पख पुष्ट मरजाद प्रवाह

अब कहूं सो हिरदे रख, अठोत्तर सौ जो है पख।
एक विचार सुनियो प्रवान, याको सार काढूं निरवान।। १ ।।

श्री महामतिजी सुन्दरसाथ को कहती हैं कि अब एक सौ आठ पक्षों का वर्णन करती हूं। उसे हृदय में रखना। एक विचार मैं तुम्हें बताती हूं जिसका सार निश्चित रूप से निकालूंगी।

माया जीव कोई है समरथ, दौड़ करत है कारन अरथ।
निसंक आपोपा डास्या जिन, निहकर्म पैंडा लिया तिन।। २ ।।

माया में जितने भी समर्थ जीव हैं वह केवल धन सम्पत्ति के लिए दौड़ते हैं। जिन्होंने निडर होकर अपने आपको कुर्बान किया है, उन्होंने ही सच्चा रास्ता ग्रहण किया है।

पुष्ट मरजाद जो प्रवाह पख, याको सार बताऊं लख।
ताके हिसे किए नौं, चढ़े सीढ़ी भगत जल भौं।। ३ ।।

पुष्टि, मर्यादा और प्रवाह पक्ष कहे जाते हैं, जिनके सार को देखकर बताती हूं। इन तीन के नौ हिस्से किए तो नवधा (नौ) प्रकार की भक्ति से बैकुण्ठ तक की सीढ़ी चढ़ते हैं और इस तरह से पुष्टि, मर्यादा और प्रवाह के नौ-नौ भाग हो गए।

भी ताके बांटे किए सताईस, चढ़े ऊंचे सुरत बांध जगदीस।
सो बांटे किए असी और एक, पोहोंचे बैकुंठ चढ़े या विवेक।। ४ ।।

फिर नौ बांटकर सत्ताईस किए। इस तरह से नवधा भक्ति वाले पुष्टि, मर्यादा और प्रवाह से बैकुण्ठ नाथ की भक्ति कर ऊंचे चढ़ते हैं। इसके भी तीन-तीन हिस्से किए और इक्यासी पक्ष हुए। जिसके विवेक से चलकर बैकुण्ठ पहुंचते हैं। (नवधा प्रकार की भक्ति—श्रवण, कीर्तन, स्मरण, पाद-सेवन, अर्चना, वन्दना, दास्य, सखा, आत्म निवेदन। इंनको किस किसने किया? श्रवण **परीक्षित**, कीर्तन **शुकदेव**, स्मरण **प्रहलाद**, पाद-सेवन **लक्ष्मी**, अर्चना **राजा पृथु**, वन्दना **अक्रूर**, दास्य **हनुमान**, सखा **अर्जुन**, आत्म निवेदन **राजा बलि**।) हर एक भक्ति को तीन-तीन तरह से सुनना और फिर प्रत्येक भाव की भक्ति तीन तरह से लाना, यह इक्यासी पक्ष हैं।